

स्वार्थी मित्र

• चित्रकथा, चित्रांकन - राजेश गुजर •

ऊँट और सियार दोनों मित्र थे। नदी के उस
किनारे खेतों में रसीले गन्ने लहलहा रहे थे।
एक दिन सियार ने ऊँट से कहा -लेकिन मुझे
तेरना नहीं आता
नदी के उस पार
कैसे जाऊँगा!तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ
मैं तुम्हें उस पार ले
चूँगा।ऊँट भाई उस
किनारे रसीले
गन्ने खाने चले।

हाँ चलो।

ऊँट ने नदी जल्दी पार कर ली और खेत के पास पहुँच
गए। रसीले गन्ने खाने लगे।देखो दूर खेत का
रखवाला सो रहा है,
जल्दी खाओ।

सियार बहुत खुश हुआ और वह पीठपर बैठ गया-

मेरा तो पेट भर गया
अब मैं गाना चाहता
हूँ। कुछ गा बूँ
तो मजा आएगा।मैं तो अभी भूखा हूँ, लेकिन
तुम गाओगे तो खेत का
रखवाला जाग जाएगा अभी
शांत रहो, बाहर जाकर
गाना।

दैवपुत्र

सियार नहीं माना और गाने लगा...



आ ३ ५ ५ ५

सियार की आवाज सुनकर रखवाला जाग गया
और लकड़ी लेकर दौड़ा।इस समय कौन
गा रहा है।सियार ने रखवाले को आते देख लिया, वह ऊँट को
बिना बताए चुपके से भाग निकला -रखवाले ने गाने बाला ऊँट को समझकर उसे
खूब मारा-पीटा। उसे भगाया।जैसे-तैसे ऊँट नदी किनारे पहुँचा, सियार वहाँ पहले
ही ऊँट के झतजार में बैठा था-सियार भाई तुमने मुझे फिर बाधा,
गया नहीं होता तो नहीं चलता ?

नदी के बीच में पहुँचकर-ऊँट ने लोटना शुरू किया

अच्छा-चलो, अब मेरी लोटने
की इच्छा हो रही है।

दैवपुत्र

ऊँट भाई नदी पार करने के बाद
लोटना। यहाँ लोटेंगे तो मैं
डूब जाऊँगा।इससे मुझे क्या तुमको खेत
में गाने का मन हुआ, मुझे
श्री नदी में लोटने का मन
हो रहा है।सियार ऊँट की पीठ पर
से लुढ़क गया और
बहते-बहते कहा -ऊँट भाई! मुझे-
बयाओ मैं डूब जाऊँगाखेत में मैंने बहुत समझाया था, फिर भी मेरा कहना नहीं
माना। मेरा साथ नहीं दिया। "सच्चा मित्र वही
है जो मुसीबत में मित्र के काम आए।"

समाप्त.

दैवपुत्र